सत्य एँव अर्थ पूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लैमेन इवैंजलिक्ल फैलोशिप, (LEF,Chennai)

मार्च-अप्रैल, 2007

क्रूस उठाकर चलना

(धन्य हैं वे जो धार्मिकता के कारण सताए जाते हैं, क्यों कि स्वर्ग का राज्य उन्ही का है। (मत्ती ५:१-१२)

धार्मिकता के लिए अत्याचार सहें - मसीहीयों के लिए यह एक सौभाग्य है। जब हम हँसी-खुशी सताव झेलते है, उसमें हमारी असलियत नज़र आती है।

एक बार साधू सुन्दर सिंह जी को पेड से बाँधकर उनके शरीर पर जोंक छोड़े गये थे। जोंकों ने अपना काम किया। और संतुष्टि से उनका खून चूस लिया। वह कमजोर और रक्तहीन हो गये। मगर, अगले दिन सुबह, जब लोग ने उनको देखा तो, वे मुस्करा रहे थे। लोग विस्मित हो गये थे। उन लोगों ने उनको रिहा किया और डरके मारे वहाँ से भाग गये। बहुधा सताव और अन्याय सहते समय, वह आनन्द ही है, जिससे बहुत लोग प्रभावित होते है। वहीं गहरा विश्वास है। मसीहीयों की अधिकांश कठिनाई, उनकी अपनी की-धरी होती हैं। मगर वे सोचते है कि वे परमेश्वर के लिए कष्ट उठा रहे है।

एक बार मैं प्रार्थना करने एक जगह पर, खारे-खाड़ी पार करके जा रहा था। ऐसे खाड़ी भाटे के समय सूखी रहती हैं। और उसे पैदल पार कर सकते है। मगर ज्वार के वापस आने पर वे भर जाती हैं। कुछ समय प्रार्थना में बिताने के बाद, प्रभु ने कहा, 'वापस जाओ।' मगर मैं और ज्यादा समय प्रार्थना करना चाह रहा था। मगर प्रभु ने मेरे वापस जाने पर जोर दिया। मैं उस खाड़ी के बारे में सब कुछ भूल गया था। मगर ज्वार का बहाव तेजी से वापस आ रहा था। मैं ठीक समय पर उसे पार कर सका।

पृष्ठ २ पर..क्रूस उठाकर चलना..

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें

'परमेश्वर की चुनौती'

ETC TV कार्यक्रम

हर शनिवार सुबह ६:३० बजे

वह हमारे अपराधों के कारण बेधा गया

'परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण बेधा गया, वह हमारे अधर्म के कामों के लिए कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी, उसके कोड़े खाने से हम चंगे हुए।' (यशायाह ५३:५)

यशायाह की पुस्तक, अध्याय ५३ में, पवित्र वचन का, सुन्दरता में बेजोड़ और हृदय विदारक एक भाग हम पाते है। कृपया पूरा लेखांश पढ़े। जहाँ, यशायाह ने, मसीह के प्रायश्चित्तिक मृत्यु का स्पष्ट और जीती-जागती भविष्यवाणी की है। यह बात याद रखें कि, वास्तव में यह घटित होने के सात सौ साल पहले ही, यशायाह ने ऐसी भविष्यवाणी की है। बाइबल का, यह एक और अनूठा पहलू है। नबियों ने नबुवत की कि मानव जाति का एक उद्धार कर्ता आने वाला है। वह उनके पापों का प्रायश्चित करेगा।

मानव हृदय में एक गहरी इच्छा है। वह यह कि अपने पाप और विद्रोह के प्रति, परमेश्वर के न्यायपूर्ण क्रोध को, वह किसी भी तरह शान्त करें। यह इच्छा, चढ़ाई जानेवाली विविध तरह के बलि के रूप में अभिव्यक्त हो रही है। इन में से कई बलि, मनुष्य के पापों का प्रायश्चित के लिए उद्देशित है। मगर पवित्र परमेश्वर के हृदय को, कोई भी चढ़ावा, कैसे प्रसन्न कर पायेगा? चाहे वह सजीव हो या निर्जीव, कीमती हो या सस्ती। परमेश्वर के लिए हमारे पाप अकथनीय रूप से घृणित और घिनौने है। जीवित परमेश्वर को हम किसी भी भेंट से प्रसन्न कर पायेंगे, और स्वर्ग जाने का मार्ग खरीद लेगें-यह एक असोचनीय बात है।

मगर परमेश्वर ने बलि चढ़ाने के लिए मेमना ढूँढ लिया है। - उनका अपना ही पुत्र, जो उनके ही स्वरूप का हूबहू प्रतिरूप है। इस तरह, जब हम निराशा में थे, उद्धारकर्ता इस दुनिया में आये। यरूशलेम की शहरपनाह के बाहर, कलवरी नामक स्थान पर अपना जीवन बलिदान कर दिया। हमारे पापों के लिए और सब मानव जाति के पापों के लिए, अपने जीवन को बलि के रूप में चढ़ाया। अस्वीकृति, घृणा और तिरस्कार सहा। लोगों ने उन पर थूका और उनकी हंसी उड़ाई। जिस पर वह मरे, वह ऐसा क्रूर क्रूस था।

कलवरी के क्रूस की विशाल कीमत आंकने के परे है। पाप से वे अपरिचित थे। उन्होंने कभी पाप नहीं किया। फिर भी मेरे और तुम्हारे पाप, उन्होंने अपने ऊपर ले लिये। हम, जो साधारण नश्वर प्राणी है, हम भी कुछ समय अपने पापों से घृणा करते है। यहाँ तक कि हम कई बार, अपने आप को दुबारा मैल ना करने की व्यर्थ प्रतिज्ञायें करते है। यह सब निरर्थक है; फिर भी। मगर पाप रहित उद्धारक स्वर्ग के पवित्र आवरण को छोड़कर इस दुनिया में आये। अतिपवित्र और उच्च स्तर का, यह प्रेम है।

बाइबल कहता है, 'इस प्रकार मनुष्य के रूप में प्रकट होकर, स्वयं को दीन किया और यहाँ तक, आज्ञाकारी रहे कि मृत्यु वरन् क्रूस की मृत्यु भी सह ली।' (फिलिप्पियों २:८) मनुष्य के पाप का दण्ड अदा करने, उन्हें, और आगे अपने आपको दीन करना पड़ा। - एक 'अमर' को मृत्यु का अपमान सहना पड़ा, और यहाँ तक कि एक अपराधी के मृत्युदण्ड की तरह। यहूदा इस्करियोती जो उनका ही चेला था, उससे धोखा खाया। अक्षरशः तीस चाँदी के सिक्कों के लिए बेच दिया। आज ऐसे कई लोग हैं जो इस से भी कम पैसों के लिए मसीह को धोखा देते हैं।

उस लालच के बारे में सोचिये, जो इस बिमार, आधुनिक समाज ने उत्पन्न किया। ऐसी झूठ, उस के लिए कुछ भी नही; धोखेबाजी एक छोटी सी बात है; अपने शरीर अनैतिकता को दे देते है; हराम की कमाई के लिए, अपनी आत्मा तक बेच देते है।

मसीह और पैसों के बीच, यहूदा को किसी एक का चुनाव करना था; उसने पैसे चुन लिये। यहूदा की त रह, कई, आज पैसों को ही चुन रहें है। नैतिक मूल्यों को तुच्छ समझ रहें है। और अपनी

पृष्ठ २ पर..वह हमारे अपराधों.. पृष्ठ १

पृष्ठ १ से..वह हमारे अपराधों...

आत्माओं को शैतान के वश में कर रहें है।

'वह तुच्छ जाना गया और मनुष्यों का त्यागा हुआ था। वह दुखी पुरुष था और पीड़ा से उसकी जान पहचान थी। वह ऐसे मनुष्य के समान तुच्छ जाना गया जिस से लोग मुख फेर लेते हैं, और हमने उसका मूल्य न जाना।' (यशायाह ५३:३) दुख भरे ये शब्द आज भी कितने सच है। इससे पहले परमेश्वर ने मनुष्य बन कर, मनुष्यों के बीच रहने कभी भी नहीं आये, जब तक यीशु न आये; इससे पहले, पृथ्वी पर ऐसा कोई नही था, जो यीशु के आने से पहले पाप रहित और अशुद्धता से अछूत रहकर इस पृथ्वी पर चला हो। फिर भी वह (यीशु) तुच्छ जाना गया और मनुष्यों का त्यागा हुआ था। उनकी बेजोड़ पवित्रता, लोगों को उनकी अशुद्धता के लिए कड़ाई से धिक्कारती है। इसलिए आज भी, यीशु के नहीं बल्कि, चाहे कोई भी हो, किसी दूसरे को अपना मानना पसन्द कर रहें है।

यह उनका पाप नहीं था जो ऐसी धिनौनी मृत्यु उनके ऊपर लाया। बल्कि हमारे अपराधों और पापों के कारण ही, वह बेधा गया। हमारे पापों को अपने शरीर के ऊपर लिया। इससे केवल शारीरिक पीड़ा ही नहीं हुई, बल्कि उनके आत्मा पर एक भारे बनकर उन्हें दबाया। इसका एक उदाहरण देता हूं। एक सेना शिविर में, वहाँ रहने वाले आदमी से एक अपराध हो गया। वहाँ का मेजर बहुत सख्त आदमी था। क्यों की अपराध का दण्ड तंबू में रहनेवाले किसी न किसी को चुकाना ही पड़ेगा, उसने चाहा कि अपराधी, अपनी गलती कबूल कर ले। उसे एक भारी कोड़े से ५० कोड़े खाने पड़ेगें। तकरीबन सब जानते थे कि वह कौन था। मगर किसी ने भी आकर अपनी गलती नही मानी। अफ़सर को निराश करते, एक छोटा ढोलकिया सामने आया। और उस लड़के ने कोड़े खाने की मांग की।

वह एक क्रूर दृश्य था। उस भारी चाबुक के नीचे, एक छोटा कमजोर लड़का है इसलिए सजा की कड़ाई कम होने वाली तो नहीं है। जैसे कोड़े पड़ते गये, विल्ली तब तक साहस के साथ कोड़ों की मार सहता रहा जब तक वह और आगे बरदाश्त नही कर पाया। वह नीचे गिर पड़ा। निर्दोष विल्ली को कोड़े खाते देखकर, असली अपराधी सहन नही कर पाया। उसने आगे आकर कोड़े लेने की माँग की। मगर दुबारा, विल्ली को दण्ड के बचे कोड़े भी खाने पड़े।

उस के बाद विल्ली दुबारा स्वस्थ नही हुआ। विल्ली की मृत्युशय्या पर, असली अपराधी रॉबर्ट रोता हुआ पाया गया, 'विल्ली, तुम ने ऐसा क्यों किया? मेरा दण्ड तुम ने क्यों लिया?'

वह ढोलकिया लड़का मसीह को जानता था। उसको लगा कि रॉबर्ट की सजा उसे अपने ऊपर लेनी चाहिए। चाहे उस में उसकी जान चली जए, फिर भी।

हाँ हमारे अनमोल प्रभु यीशु ने हमारे पापों को अपने शरीर के ऊपर ले लिया। हमारे स्थान पर वह मरे। ताकि हमारे पापों से हमें छुटकारा मिले। और एक विजयी और अति सुन्दर जीवन, हम जिएं, जो वह (यीशु) हमें देते है।

- जोशुआ दानिय्येल

पृष्ठ १ से ...क्रूस उठाकर चलना...

अब अपनी जवानी में हम सब कुछ सुखा देखते है। उन सूखे मैदानों को पार कर जाना चाहते है। और अपनी चाहत के सारे विलासों का आनन्द उठाना चाहते हैं। ये सूखे मैदान, वास्तव में खाड़ी हैं। वे एक दिन भर जायेंगीं। और तुम वापस नही आ पाओगे। ऐसी मुश्किलों में फँस जाओगे, जिसे तुम पार नही कर पाओगे। तुम बहाव में फँस जाओगे। परमेश्वर हमें चेतावनी देते है और हमें तैयार करते है।

धन्य है वे जो धार्मिकता के लिए, अपनी जवानी के शिखर पर ही सताव झेलते है, और भविष्य जीवन के लिए अपने आप को तैयार करते है। जब मैं नवजवानों को हँसते देखता हूँ तो मैं चाहता हूँ कि वे जिन्दगी भर हँस पाये। और हमेशा खुश रह पाये। मगर वे ऐसे जी नही पायेंगे। जल्द ही वे जीवन की कठिनाइयों में फँस जायेंगे। और दुःखी हो जायेंगे।

यीशु के दोनों ओर स्थित चोर, अपने पापों के लिए मर रहे थे, परमेश्वर के लिए नही। कई कहते है, 'मैं मसीह के लिए कष्ट उठा रहा हूँ।' कैसे? 'मेरा बेटा भटक गया है। मेरी बेटी ऐसे बरताव कर रही हैं।' क्यों? क्योंकि तुमने उन्हें, कभी परमेश्वर का वचन नही सिखाया।

परमेश्वर प्रकृति के नियम को तोड़ सकते है। मगर दैविक व्यवस्था के विरुद्ध कभी नही जायेंगे। मसीह को इसीलिए मरना पड़ा। अगर तुम्हारा शरीर टेढ़ा हो जाय तो, वह उसे सीधा कर सकते है। अगर तुम दिव्य नियम के विरूद्ध गये हो, तो पुनः स्थिति पर लाने के लिए, क्रूस ही एक मात्र मार्ग है। यह जान ले कि ज्वार ज़रूर उठेगा। जीवन की कठिनाइयाँ, तुम्हें (ज़रूर) कुचल डालेंगीं। तब तक तुम्हारे माता-पिता इस संसार को छोड़ गये होंगे। तुम्हें अकेले ही मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा, जिसे तुम हल नही कर पाओगे।

लोग आत्मिक जन्म के विषय में लापरवाह हैं। इसका यह मतलब है कि जीवन के अत्यंत मूल विषय के प्रति लापरवाही। आर्थिक, विद्या और चिकित्सा - इन क्षेत्रों में देशीय पूनः निर्माण हो रहा है। फिर भी सब उलट - पुलट हो रहा है। क्यों? आध्यात्मिक विषयों के प्रति लापरवाही है। परमेश्वर के सामने तुम्हारा क्या स्थान है?

जब तुम धार्मिक बन जाओ तो, दुनिया यह सहन नही कर पायेगी। और तुम्हें सताएगी। धार्मिक लोग भी तुम्हारा हँसी उड़ायेंगे। परमेश्वर की सन्तान के लिए सताव है। हमें खुशी से उसका स्वीकार करना है। हम कितना सह पा रहें है? दूसरों के दुःख को, प्रार्थना में हम कितना अपने ऊपर ले पा रहे है? परमेश्वर के प्रति जो सच्चे है उनको वह ज़रूर साबित करेंगे। हमें चिंतित होने की ज़रूरत नही है। परमेश्वर हमारे लिए ज़रूर बदला लेंगे।

मसीह के लिए और दूसरों के लिए खुशी-खुशी दुःख सहने में, परमेश्वर हम सब की मदद करें।

- स्वर्गीय श्रीमान एन दानियेल

For More Details Please contact on any of the following Bookstalls

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532-2642872.

BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002

MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840

NOIDA(Delhi): Beautiful Books, Basement, Sharma Market, Atta, Sector-27, NOIDA, Uttar Pradesh Ph.09810776324.

GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733

SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

पहले परमेश्वर की खोज करना

प्रभु परमेश्वर के सामने हम किस स्थान पर खड़े है - तनाव से भरे इन दिनों में, हमें यह जान लेना जरूरी है। हमें लगातार इस की सूची बनाते रहना चाहिए। क्या हम उन्हें अपने जीवन में प्रथम स्थान दे रहे है? अपने सब कार्य में, क्या हम उनका स्मरण कर रहें है, ताकि वह हमारे मार्ग सीधे करें? छोटा विषय हो या बड़ा, परमेश्वर के प्रति क्या हम विश्वसनीय हैं? (मत्ती ६:३३; नीतिवचन ३:५,६)

श्रीमान आर.जी.ला तॉरनो, इस विषय से जुड़ी हुई एक कहानी बता रहे है। उनके उत्पादन व्यवसाय के प्रारंभिक सालों की यह कहानी है। एक ऐसी कहानी जो मेरे अपने, विश्वास की सामर्थ और प्रोत्साहन का वह स्रोत रहा है।

उन प्रारंभिक दिनों में, उन्ही के नाम से, अभी-अभी विकसित होता उद्योग था। कारोबार तो छोटा था। मगर प्रतिस्पर्धा तीव्र थी। उन दिनों कारोबार की दुनिया में, चिरस्थायी संघर्ष और कठिनाई से भरी जिंदगी थी।

श्रीमान ला तॉरनो की कम्पनी में, बहुत बड़े यंत्र-समूह का निर्माण हो रहा था। उसमें एक विशेष पुरज़े की जरूरत थी। एक दिन, देरी से कर्मचारियों द्वारा श्रीमान ला तॉरनो के ध्यान में यह विषय लाया गया कि उन्हें उस पुरज़े की जरूरत थी। अगर पुरज़ा तैयार नही हुआ, तो कारखाने में काम स्थगित करना पड़ेगा।

समय कम था। भोर तक कारीगरों के पास पुरजे का नक्शा पहुँचाना जरूरी था। क्या तब तक वह बन पायेगा? उस यंत्र को कैसे बनाया जाए? गणना करने और रूपरेखा ख़ीचने में ही पूरी शाम लग सकती है। उनके लिए, यह मतलब था कि वे पेन्सिल और पैमाना (स्लाइड रूल) लेकर ड्राफ्टिंग बोर्ड़ पर पूरी रात गुजारें।

ये सारे सवाल उनके मन में उठ रहें थे। तब अचानक उन्हें याद आया कि उस शाम, किसी दूसरे कार्यक्रम में शामिल होने के लिए पहले से ही वचनबद्ध हैं। कैसा वचन? कलीसिया के कुछ नवजवानों के समूह को मदद करने की सहमती दी थी। यह दल शहर में सुसमाचार प्रचार करनेवाली किसी कलीसिया में होने वाली सभा का निर्वाह करने वाले था। और उन्होंने उस सभा में गवाही देने और गाने में मदद करने का वादा किया था।

उन्होंने अपने आप से कहा: 'प्रभु, मैं मिशन में आज नहीं जा सकता। यह जरूरी है कि मैं मशीन के इस मुख्य पुरज़े का नक्शा बनाऊँ। कल सुबह, पहले भाग की शुरुआत करने के लिए आदमी इन्तजार में है। उस पुरज़े की कल्पना करते और नक्शा बनाते, मुझे पूरी रात लग सकती है। शायद उस से भी ज्यादा। इसके अतिरिक्त, आज रात मिशन में मेरा कोई विशेष भाग भी नही है। और मेरे बगैर भी नवजवान आगे बढ़ सकते है।'

मन में यह संघर्ष कुछ मिनट तक चला। मगर परमेश्वर ने याद दिलाया कि उन्होंने नवजवानों से वादा किया है। यह वादा कि मिशन में आयोजित सभा में वह उनकी मदद करने वाले थे।

अंत में उन्होंने कहा, 'प्रभु, मैं जाऊँगा। मशीन के उस पुरज़े के बारे में, कल मैं क्या करूँगा, मैं नही जानता! मगर मैं चला जाता हूँ।'

उस शाम, वे अपने मन से कहती, प्रभु की वाणी को मानते हुए मिशन में गये और सभा में भाग लिया।

रात दस बजे वे घर लौटे। वह थक गये थे। ऐसा लग रहा था मानो वे आधी नींद में है। उस पुरज़े का क्या होगा? उस नीले-नक्शे पर काम शुरू करने के लिए, क्या अब बहुत देर हो चुकी है? हताश, थकी-माँदी उस हालत में नक्शे पर वह अपना मन कैसे केन्द्रित कर पायेंगे?

अपना कोट फिर वापस पहनते हुए कारखाने के दफ्तर की ओर पैदल चलते गये। और ड्राफ्टिंग बोर्ड के सामने बैठ गये। वही पर कुछ देर तक बैठे रहें। सोचने या कल्पना करने में वे अक्षम लग रहे थे। तब, अचानक, उस जरूरी पुरज़े का सारा डिजाइन उनके मन में एक झलक की तरह गुज़रा। जल्द ही उन्होंने हिसाब लगाया और कागज़ पर लिख दिया।

अगले दिन सुबह उस भाग की कैसे शुरूआत करनी है, इसकी निर्देशन सूची छोड़कर वह अपने घर लौट आये और सो गये।

उस रात, परमेश्वर ने उनके लिए कैसा महान कार्य किया! प्रभु ने अपने विश्वासी, आज्ञकारी दास का सम्मान किया। उस यंत्र ने, जिस की कल्पना मिशन-सभा से लौटने के बाद कुछ ही मिनटों में की गई थी, पूर्ण रूप से अच्छा काम किया। वास्तव में, उस भाग के पुरज़े की क्षमता इतनी सिद्ध थी कि उस कारखाने में बनी हर यंत्र-समूह की इकाई, प्रतिस्पर्धा में लगी हर एक कंपनी द्वारा निर्मित यंत्रों से बढ़कर स्वीकृत और लोकप्रिय बन गई।

और इसके अतिरिक्त, आज तक, हर मशीन में लगे मुख्य नियंत्रण भाग का, वह एक विशेष पुरज़ा है।

- चुनीहुई।

सिर्फ स्वामी को प्रसन्न करना

फटे-पुराने कपड़े पहने एक लड़का यूरोप के एक महान शहर की गलियों में घूमा करता था। (हाथ में) बगल में एक वायलिन लिए घूमता था। भोजन और आश्रय की तलाश में जगह-जगह भटकता रहता था। क्योंकि उसका कोई घर या परिवार नही था। इस छोकरे के पास संगीत की एक अनोखी प्रतिभा थी। उसने किसी तरह एक वायलिन प्राप्त किया। सड़क के किसी कोने पर खड़ा रहता और गुजरती भीड़ के लिए बजाता था। जब वे सुनते सुनकर सम्मोहित हो जाते थे। और आगे सुनने के लिए उसके चारों ओर इकट्ठा हो जाते थे। जब वह बजाना समाप्त करता, वे उसके पैरों पर सिक्के फेंकते थे। इस तरह वह जीने के लिए थोड़ा कुछ कमा लेता था, मगर ईमानदारी से।

उसी शहर में एक विख्यात संगीतज्ञ रहते थे। एक दिन ऐसा हुआ कि वे उसी जगह से गुजर रहे थे, जहाँ वह फटीचर लड़का बजा रहा था। असाधारण दरजे का संगीत सुनकर उनका ध्यान उस पर लगा। भीड़ के चले जाने तक उधर ही रुके रहे।

और तब उन्होंने उस नन्हे वायलिन वादक से कहा, 'बेटा, तुम किस के बच्चे हो?'

'मेरा कोई नही है,' बच्चे ने उत्तर दिया।

'ठीक है तुम कहाँ रहते हो?' यह अगला प्रश्न था।

पृष्ठ ४ पर..सिर्फ स्वामी को प्रसन्न...

सत्य की परख!

'क्यों कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, कि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। (यूहन्ना ३:१६)'

एक विशाल ऋण अदा किया गया

क्यों कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, कि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। (यूहन्ना ३:१६)

रूस का सम्राट दिवंगत जार निकोलस, एक साधारण अफसर के कपड़े पहने, सैनिकों के शिविर और उनके निवासों मे घूमा करता था। पहचाने जाये बिना, यह जानने के लिए कि क्या हो रहा है।

एक रात बहुत देर बाद, जब सारे दीप बुझाये जाने चाहिये थे, ज़ार अपनी ऐसी ही एक तहक़ीक़ात पर निकले थे। उन्होंने यह देखा कि वेतन-अधिकारी के द्वार अब भी दीप चमक रहा है। उन्होंने चुपके से द्वार खोले और अन्दर गये। एक नवजवान अफ़सर मेज के पास बैठा था। वह ज़ार के पुराने मित्र का बेटा था। अपने हाथों के ऊपर सर रख कर, गहरी नींद में था। उसे जगाने के लिए ज़ार ने आगे कदम बढ़ाया। मगर ऐसे करने से पहले, गोलियों से भरा एक पिस्तौल, पैसों का छोटा सा ढेर, उस पर ज़ार की नज़र पड़ी। एक कागज और एक कलम जो उस सो रहे आदमी के हाथ से गिरा था, उधर दिखाई दिये। उस कागज पर क्या लिखा है, छोटी सी मोंमबत्ती की रोशनी में ज़ार वह पढ़ पाये। एक पल में उनको सारी परिस्थिति समझ में आ गई।

उस कागज़ पर, ऋण की एक लम्बी सूची थी जो जुआ खेलने और दूसरे व्यसनों के कारण हुये थे। कुल मिलाकर वह ऋण कई हज़ार रूबल तक हो गया था। वह अफ़सर सैनिक-निधि के पैसों को अपनी लापरवाही और दुष्टता में किये गये कर्जो को चुकाने के लिए इस्तेमाल कर रहा था। और अब देर रात तक अपने हिसाब को सीधा करने की कोशिश में लगा था। और पहली बार उसे आभास हुआ कि उस पर कितना ऋण-भार है। कोई आशा नही; दयनीय रूपसे हाथों में थोड़ा सी रोकड़ और भरने के लिए इतना बड़ा कर्जा। उस कागज के पन्ने पर, उस भयंकर कुल जोड़ के नीचे यह प्रश्न लिखा हुआ था: 'इतना विशाल ऋण कौन चुका पायेगा?' इस बदनामी को सहन करने कि क्षमता उस में न थी। और उसने अपने आप को गोली
मारने का निर्णय लिया था। मगर दुख और पश्चात्ताप के कारण पूर्ण रूप से हताश हो कर वह सो गया था।

जैसे-जैसे उस ज़ार को समझ में आ रहा था कि क्या हुआ है, उनका पहला विचार यह था कि उस आदमी को तुरन्त गिरफ्तार किया जाय। और आगे फौजी न्यायालय में जाँचने के लिए सौंपा जाय। सेना में, न्याय का पालन करना ज़रूरी है। और ऐसे अपराध को नज़र अन्दाज नही किया जाना चाहिए। मगर उस नवजवान के पिता से अपनी लम्बी दोस्ती याद करने लगे तो, प्रेम ने न्याय पर विजय पा ली। एक पल में उन्होंने एक योजना तैयार की। ताकि सेना के प्रति वह न्याय करें और फिर भी अपराधी को रिहा करें। थके-माँदे, निराश उस अपराधी के हाथों से गिरे कलम को ज़ार ने
उठाया। और स्वयं अपने ही हाथ से उस प्रश्न का उत्तर दिया, 'निकोलस'।

हाँ, स्वयं ज़ार निकोलस, उस ऋण को अदा करेंगे। उन्होने अपनी इच्छानुसार ही यह करने का निर्णय लिया। ज़ार के निकल जाने के तुरन्त बाद वह नवजवान जाग उठा। अपने भेजे को उड़ाने के लिए पिस्तौल लिया। मगर जब ऐसे करने जा रहा था तो उसकी नज़र ज़ार के लिखे हुए उत्तर पर पड़ी। विस्मित और चकित होकर उस शब्द को देखता रहा, 'निकोलस'। निश्चय ही ऐसा समाधान असंभव है। उनके पास कुछ कागज़ थे, जिस पर ज़ार का प्रमाणित हास्ताक्षर था। उसने जल्दी से उन दोनों की तुलना की। क्योंकि यह सच हो, तो बहुत बड़ी बात है। अपनी बेहद खुशी के बावज़ूद, अपना कड़वा अपमान उसकी समझ में आया कि ज़ार उसके सारे पापों के बारे में जानते है। उसके विशाल ऋण के बारे में जानते है। फिर भी, दण्ड जिसका वह पात्र था, देने के बजाय, सारा कर्ज स्वयं अपने ऊपर ले लिया और ऋणी को मुक्त किया।

आनन्द और शान्ति से भरा, वह विश्राम करने लेट गया। अगले दिन सुबह, ज़ार की तरफ से पैसों से भरे थैलीयां आई। उस 'विशाल ऋण' के आखिरी पैसे तक चुकाने लिए वह पैसे पर्याप्त थे।

प्रिय पाठक, मेरा और तुम्हारा एक विशाल ऋण है। हम यह पूछ सकते है, 'कौन उसको चुकता करेगा?' धन्यवाद परमेश्वर, कि प्रेम ने इस प्रश्न का उत्तर दिया। और उस ज़ार के दिये हुए समाधान की तरह, यह एक शब्द है 'यीशु'।

हाँ, वह हमारे सारे कर्जो के बारे में जानते हैं। और वह कितना विशाल है, यह भी जानते हैं। उसका सारा अपमान वह जानते हैं। उसे चुकाने का कीमत वह जानते हैं। तुम्हारे बारे में और तुम्हारे ऋण के बार मे इतनी गहराई से जानने के बावजूद भी, वह स्वयं उस सब के देनदार बने। एक शब्द 'निकोलस', ने उस नवजवान के हृदय को आराम पहूँचाया; यहाँ तक कि उसे आनंद से भर दिया। एक शब्द 'यीशु' ने मेरे हृदय को आराम पहूँचाया और उसे आनन्द से भर दिया है। क्या उस 'एक शब्द' व आशीष से भरे नाम ने तुम्हारे हृदय को आराम, शान्ति और आनन्द से भर दिया है? हाँ, वह कर सकता है!

- चुनीहुई

पृष्ठ ३ से..सिर्फ स्वामी को प्रसन्न...

'रहने के लिए मेरी कोई जगह नही हैं। जहाँ हो पाय, उधर ही गली में सो जाता हूँ।' उस आदमी ने एक पल के लिए सोचा और कहा, 'मेरा लड़का बनकर मेरे पास रहना, तुम को कैसे लगेगा? वायलिन बजाने के बारे में, मैं जो कुछ४ भी जानता हूँ, मैं तुम को सिखाऊँगा।'

मैल और गंदगी के परे, उस लड़के की आखों मे चमक दिखाई दी। और उसने कहा, 'श्रीमान, मुझे बहुत अच्छा लगेगा।' इस तरह वह महान संगीतकार उसको अपने ही घर ले गये। उसे नहलवाया और कपड़े पहनवाये। उस लड़के के वह पिता समान बने। वायलिन बजाने के बारे में वह जो कुछ भी जानते था, कई सालों तक उस उत्सुक नवजवान के दिलो-दिमाग में भर दिया। अंत में, वह लड़का अपना पहला सार्वजनिक संगीत-पाठ देने के लिए तैयार हो गया। और यह बात चारों ओर फैल गई कि संगीत गोष्ठी में एक नया, महान बाल संगीतकार आने वाला है। गोष्ठी घर उस रात पूरा भर गया था, और बालकनी भी पूरी भर गयी थी।

आखिर वह लड़का आगे आया। ठोड़ी के नीचे वायलिन रखा और बजना शुरू किया। उसने ऐसा बजाया कि लोगों ने इससे पहले कभी ऐसा संगीत नही सुना था। जब भी वह रूकता, लोग जोर से ताली बजाते। फिर भी, किसी कारण, उस जय-जयकार पर लड़के का ध्यान नही था। अपनी आखों को ऊपर केन्द्रित किये, वह बजाते जा रहा था। प्रेक्षक उसके अजीब बरताव से पहेली में पड़ गये। आखिर एक आदमी ने कहा, 'मुझे समझ में नही आ रहा कि इस सब गरजती जय-जयकार की तरफ, ये लड़का इतना बेखयाल क्यों है। हमेशा ऊपर ही देखता जा रहा है। उसका ध्यान क्या आकर्षित कर रहा है, यह पता लगाने मैं जा रहा हूँ।'

गोष्ठी-कक्ष में इधर-उधर टहलने के बाद, उस प्रेक्षक को जवाब मिल गया। सबसे ऊपर, बालकनी में वह वृद्ध संगीत का गुरू था। वह सीढ़ियों के जंगले के ऊपर से, अपने नवयुवक शिष्य को झाँक कर देख रहा था। वह अपने सर हिलाते मुस्कुरा रहा था। मानो यह कहते, 'मेरे बेटे, तुम अच्छा कर रहे हो। आगे बजाओ!' और वह लड़का आगे बजाता गया। प्रेक्षक हँस रहे है या जय-जय कार कर रहे है, इसकी उसे कोई परवाह नही थी। उसकी नज़र ऊपर ही थी। वह सिर्फ अपने गुरू को प्रसन्न करने के लिए ही बजा रहा था।

सिर्फ प्रभु यीशु मसीह को प्रसन्न करने के लिए, अपना सर्वोत्तम लगायें - यह कितना आनन्ददायक है। वह हमारा प्रभु है। उनकी अनुमति के लिए हमें उनकी तरफ देखना चाहिए।

- चुनीहुई

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दीजिए।